साहित्य अकादेमी
रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग
नई दिल्ली 110 001

प्रेस विज्ञप्ति

साहित्योत्सव का तीसरा दिन
युवा लेखकों का रचना–पाठ
पुरस्कृत लेखकों ने साझा की अपनी रचना–प्रक्रिया

रामचंद्र गुहा द्वारा संवत्सर व्याख्यान

नई दिल्ली, 23 फ़रवरी 2017 । साहित्योत्सव के तीसरे दिन की शुरुआत पूरे देश के युवा रचनाकारों की सृजनात्मकता को एक मंच पर प्रस्तुत करने के कार्यक्रम 'युवा साहिती : नई फ़सल' के साथ हुई। प्रख्यात तमिळ लेखक बी. जयमोहन ने उद्घाटन भाषण प्रस्तुत किया। विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रख्यात तेलुगु लेखक और लोकगीतकार गोरेटी वेनकन्ना उपस्थित थे। बी. जयमोहन ने उद्घाटन भाषण में पिछले सौ वर्षों में आधुनिक तमिळ काव्य में धर्म और संस्कृति की उपस्थिति पर अपनी बात प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि हमारे आधुनिक साहित्य में धर्म और संस्कृति के प्रतीक पश्चिमी दबाव के कारण गायब होते जा रहे हैं। जब कि नई पीढ़ी को भी धर्म और संस्कृति से वर्तमान को पहचानने की दृष्टि मिलनी चाहिए। तेलुगु गायक और लेखक गोरेटी वेनकन्ना ने दो गीत प्रस्तुत किए। सास्वर गाये गये इन गीतों ने श्रोताओं को बेहद प्रभावित किया। इसके बाद अविनुयो किरे (अंग्रेज़ी), प्रतिष्ठा पंड्या (गुजराती), निशांत (हिंदी), बी. रघुनंदन (कन्नड), समप्रीथा केश्वन (मलयाळम्) और मोइन शादाब (उर्दू) ने अपनी–अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। सभी कवियों ने एक कविता अपनी मातृभाषा में प्रस्तुत की तथा शेष कविताओं के अंग्रेज़ी/हिंदी अनुवाद प्रस्तुत किए।

युवा साहिती के पहले सत्र में प्रख्यात लेखक एवं साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य मनोज दास से युवा लेखकों का संवाद कराया गया। युवाओं ने उनकी रचना–प्रक्रिया तथा वर्तमान में विभिन्न दबावों के बीच उत्कृष्ट रचनाओं का सृजन कैसे हो पर उनकी राय जानी। अन्य प्रश्न साहित्य की वर्तमान में उपयोगिता और प्रासंगिता को लेकर थे।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता अंतरा देव सेन ने की और इसमें बिपाशा बोरा (असमिया), देवदान चौधुरी (अंग्रेज़ी) और एस. राजमणिखम (तमिळ) ने 'लेखन : जुनून या व्यवसाय' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

तीसरे सत्र की अध्यक्षता कवि ब्रजेन्द्र त्रिपाठी ने की और सायंतनि पुतातुंडा (बाङ्ला), परगत सिंह सतौज (पंजाबी), पूदूरी राजी रेड्डी (तेलुगु) और कोमल दयालानी (सिंधी) ने कहानियाँ प्रस्तुत की।

चतुर्थ एवं अंतिम सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात कवि बोधिसत्व ने की तथा मिथिंगा राजा बसुमतरी (बोडो), केवल कुमार केवल (डोगरी), मुज़फ़्फ़र हुसैन दिलबीर (कश्मीरी), इकनाथ गाउँकर (कोंकणी), चंदन कुमार झा (मैथिली), सुशील कुमार शिंदे (मराठी), बुद्धिचंद्र हेइसनाम्बा (मणिपुरी), अमर बानिया लोहोरू (नेपाली), इश्िता षड़ंगी (ओड़िया), राजू राम बिजारणिया 'राज' (राजस्थानी), रामकृष्ण पेजत्ताय (संस्कृत) और महेश्वर सोरेन (संताली) ने अपनी–अपनी कविताएँ प्रस्तुत की।

लेखक सम्मिलन कार्यक्रम के अंतर्गत आज साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2016 से पुरस्कृत लेखकों ने अपने रचनात्मक अनुभव साझा किए। हिन्दी के लिए पुरस्कृत नासिरा शर्मा ने कहा, ''कभी जन्नत तो कभी दोज़ख़'' यह वाक्य दरअसल मेरी ज़िन्दगी का निचोड़ है और उसी स्वर्ग–नर्क को झेलते हुए मेरे किरदार मेरे लेखन के दायरे में साँस लेते नज़र आते हैं। ज़मीन पर बसी जन्नत व दोज़ख़ मेरी काया में प्रवेश कर अपनी सैर पर मुझे ले जाती है चाहे वह इलाहाबाद की गलियाँ हों या फिर पश्चिमी एशिया के सुलगते देश। जो आग आपको जला न रही हो मगर उसकी तपिश को आप दूर से महसूस करते हैं उसकी आँच आपको पिघलाती और पन्ने रंगवा लेती है। ज्ञात हो कि उन्हें अपने उपन्यास 'पारिजात' पर यह पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

मैथिली में पुरस्कृत श्याम दरिहरे ने कहा, जहाँ तक मैथिली कहानी लेखन का प्रश्न है तो वह मिथिला की विशिष्ट संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती आज भी दिखलाई देती है। पैदल यात्रा की आदी मैथिली कथा आज गगनगामी और अंतरिक्षचारी हो गई है। वह कथानक संबंधी सभी विषयों को अपने में यथोचित स्थान दे रही है। इतनी विविधता के बाद भी मैथिली कहानी एक अघोषित, अदृश्य और अपरिभाषित सांस्कृतिक सीमा रेखा के अंदर अपनी मैथिली मिठास को बचाये हुए है।

मराठी में पुरस्कृत आसाराम लोमटे ने कहा, बाज़ार में स्वास्थ्यकारक जीने के उत्पादनों की चाहे जैसी भरमार हो, लेखक को लेकिन स्वास्थ्यहारक लेखन ही करना चाहिए। मैं ऐसा लेखन करने की कोशिश में हूँ कि जिसके पढ़ने पर सवाल खड़े हो, नींद उड़ जाए, अनगिनत भौरों का छत्ता फूट पड़े और पढ़नेवालों को वे दंश करे। मैंने देखा है कि पैरों में काँटा चुभने पर होनेवाली पीड़ा को दूर करने के लिए उस जगह पर मोम लगाकर आग से दागा जाता है। लिखने को मैं इसी तरह की दागने की बात मानता हूँ।

राजस्थानी में पुरस्कृत बुलाकी शर्मा ने अपनी रचना प्रक्रिया के बारे में बोलते हुए कहा कि आधुनिकता के इस दौर में भी किसी रचनात्मकता का उत्पादन नहीं किया जा सकता है। इसके लिए लेखक और रचनाकार का निर्मल–निश्छल मन आवश्यक होता है। सुधि पाठक ही किसी रचना के सच्चे आलोचक होते हैं। मैं अपने पाठकों और आलोचकों से सीखता और कुछ ग्रहण करता रहा हूँ।

कश्मीरी लेखक अज़ीज़ हाजिनी ने कहा कि कवि और लेखक कोई देवदूत नहीं होते वो भी आम आदमी की तरह होते हैं जिनकी सृजनात्मक क्षमताएँ कुछ अलग होती हैं। समाज की विभिन्न गतिविधियों में शामिल होते हुए भी लिखते समय वे उनसे अलग होकर कुछ बेहतर कह पाते हैं। अन्य लेखकों ज्ञान पुजारी (असमिया), नृसिंह प्रसाद भादुड़ी (बाङ्ला), अंजली बसुमतारी (अंजु) (बोडो), कमल वोरा (गुजराती), बोलवार महमद कुंञि (कन्नड), एड्वीन जे.एफ़ डिसोजा (कोंकणी), प्रभा वर्मा (मलयाळम्), मोइराङ्थेम राजेन (मणिपुरी), गीता उपाध्याय (नेपाली), पारमिता शतपथी (ओड़िया), स्वराजबीर (पंजाबी), गोबिन्दचंद्र माझी (संताली), वन्नदासन (तमिऴ), पापिनेनि शिवशंकर (तेलुगु) और निज़ाम सिद्दीक़ी (उर्दू) ने भी अपनी रचना प्रक्रिया श्रोताओं से साझा की।

आज शाम प्रख्यात विद्वान एवं इतिहासकार डॉ. रामचंद्र गुहा ने अकादेमी की प्रतिष्ठित संवत्सर व्याख्यानमाला के अंतर्गत 'ऐतिहासिक जीवनी का शिल्प' विषयक व्याख्यान दिया। आरंभ में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए डॉ. गुहा का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया। अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने पुष्पगुच्छ और किताबें भेंटकर उनका अभिनंदन किया।

डॉ. गुहा ने बताया कि कैसे वेरियन एल्विन के जीवन एवं कृतित्व ने उन्हें एवं उनके दृष्टिकोण को पूरी तरह बदल दिया। उन्होंने उनकी जीवनी लेखन के अपने प्रयत्न को संदर्भित करते हुए जीवनी लेखन की चुनौतियों की चर्चा की। उन्होंने कहा कि ऐतिहासिक जीवनी इतिहास का वह हिस्सा है, जो साहित्य से सबसे ज़्यादा जुड़ा हुआ है। इतिहास समाजशास्त्र और साहित्य के बीच डोलती है। इतिहासकारों द्वारा जीवनी लेखन से दूर रहने के कारणों पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने इसका पहला कारण धार्मिक विरासत को बताया। हिंदुत्व जैसे धर्म कर्म एवं पुनर्जन्म आधारित व्यवस्था पर अपने पारंपरिक विश्वास के नाते जीवनी लेखन के विरोधी हैं। दूसरा कारण वैचारिक विरासत है, विशेषकर मार्क्सवाद, चूँकि मार्क्सवाद व्यक्ति को कम महत्त्व देता है। तीसरा कारण इतिहास का समाजशास्त्र के प्रति झुकाव है, यद्यपि इतिहास साहित्य की शाखा के रूप में शुरू हुआ। चौथा कारण भारतीयों द्वारा अभिलेख की भिन्नताएँ हैं। देश के केंद्रीय एवं राज्य अभिलेखागार पूरी तरह अव्यवस्थित हैं। पाँचवा कारण यह है कि भारतीय जीवनी लेखन में प्रतिष्ठित व्यक्तियों के दोषों के उल्लेख में संकोची हैं। छठा कारण यह है कि जीवनी लेखन चुनौतीपूर्ण साहित्यिक विधा है। सातवाँ कारण यह है कि जीवनी लेखन में एक लेखक को अपने अहं को दबाकर दूसरे अहंकारी लेखक के बारे में लिखना होता है। मुख्यतः यही वे कारण हैं, जिनके कारण ऐतिहासिक जीवनियों को व्यापक स्वीकृति कभी नहीं मिली। उन्होंने जीवनी लेखन के चार केंद्रीय सिद्धांत बताए : क) द्वितीयक चरित्र भी कहानी के लिए महत्त्वपूर्ण होते हैं, ख) जीवनी लेखक को केंद्रीय चरित्र के अलावा भी अन्य स्रोतों को भी देखना चाहिए, ग) जीवनी लेखक को पूर्वाग्रही नहीं होना चाहिए; तथा घ) जीवनी लेखक दूसरी जीवनियों से प्रभावित नहीं होना चाहिए।

व्याख्यान के बाद डॉ. गुहा ने सुधी श्रोताओं द्वारा की गई जिज्ञासाओं का भी शमन किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में लेखक, विद्वान और साहित्यप्रेमी उपस्थित थे।

सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत जवाहर लाल नेहरू मणिपुर डांस अकादमी, इम्फाल द्वारा लाई हारोबा, माव और काबुई नृत्य प्रस्तुत किए गए।

कल साहित्योत्सव के चौथे दिन त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 'लोक साहित्य : कथन एवं पुनर्कथन' का शुभारंभ होगा। 'आमने–सामने' कार्यक्रम के अंतर्गत पुरस्कृत लेखकों से प्रसिद्ध साहित्यकार एवं विद्वान बातचीत करेंगे। पूर्वोत्तरी कार्यक्रम के अंतर्गत उत्तर–पूर्व और उत्तरी लेखक सम्मिलन आयोजित होगा जिसमें पच्चीस से ज्यादा रचनाकार अपनी रचना प्रस्तुत करेंगे। सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत त्रिपुरा के राजा हसन, बाउल गान प्रस्तुत करेंगे।